

तीजन बाई पर विशेष

ISSN 2394-1723

मूल्य : 50 रुपये

वापस

बाजार-आश्रय कलाओं को
किधर ले जा रहा है

अशोक वाजपेयी ज्योतिष जोशी अशोक भौमिक
विनोद भारद्वाज कंवल धालीवाल विजय कुमार
प्रस्तुति : संध्या नवोदिता

वर्ष 32 अंक 371 अक्टूबर-2026

कहानियां

जमुना बीनी, ब्रजेश कुमार
गिरिजा कुलश्रेष्ठ देवांशु पाल
अशर नज्मी(उर्दू)



भारतीय भाषा परिषद्

ISSN : 2394-1723

vagarth

भारतीय भाषा परिषद की मासिक पत्रिका

वर्ष 32, अंक 371, अक्टूबर 2026

संपादक
शंभुनाथ

प्रबंध संपादक
प्रदीप चोपड़ा
प्रकाशक
डॉ. कुसुम खेमानी

संपादन सहयोग
अंक सज्जा
सुशील कान्ति

संपादकीय विभाग
36 ए, शेक्सपियर सरणी
कोलकाता-700017
vagarth.hindi@gmail.com
7449503734
(दिन 12 बजे से संध्या 6 बजे)

इस अंक में

कलाएं और बाजार का सौंदर्यशास्त्र : संपादकीय 5

कहानियां

उधर : जमुना बीनी 13

दलाल : ब्रजेश कुमार 25

डायरी का आखिरी पन्ना : गिरिजा कुलश्रेष्ठ 39

लिंक फेल : देवांशु पाल 49

सुप्रीम लीडर का जूता (उर्दू कहानी) : अशर नज्मी

(अनुवाद : रिजवानुद्दीन फारूकी) 55

कविताएं

पवन करण/चारुमित्रा/यश मालवीय/अनुरोधा ओस

अनिरुद्ध सिन्हा/लवली गोस्वामी/श्रद्धा सुनील 60

मलयालम कविता : के सच्चिदानंदन (अनुवाद : महेश एस) 69

तीजन बाई : राजेंद्र शर्मा 71

परिचर्चा

बाजार-आश्रय कलाओं को किधर ले जा रहा है :

अशोक वाजपेयी/ज्योतिष जोशी/विनोद भारद्वाज

अशोक भौमिक /कंवल धालीवाल/विजय कुमार

(प्रस्तुति : संध्या नवोदिता) 74

विश्वदृष्टि

रोमानियन कविताएं : मारिन सोरेसक्यू

(अनुवाद : मणि मोहन) 101

समीक्षा संवाद

कविता के बहुरंग : सरोज सिंह

(शांति नायर, बोधिसत्व, नताशा और रामप्रवेश रजक की पुस्तकें) 103

सोशल मीडिया 116

स्मरण : महात्मा गांधी 118

विविध

पाठक संसद 120

लघुकथा

पासवर्ड : ज्ञानदेव मुकेश 24

देश-देशांतर

प्रभा वर्मा (मलयालम)/मारिन सोरेसक्यू (रोमानियन कविताएं)

कविताओं में रेखांकन : नरसिम्मा बालाजी

नेट से साभार

वार्त् सदस्यता और बिक्री संपर्क

एक प्रति : 50/-

सामान्य वार्षिक सदस्यता (डाक व्यय सहित) : 550 रुपये

वार्षिक सदस्यता (रजिस्टर्ड डाक) 550+1008 = 1558 रुपये

आजीवन : 10,000 रुपये/(साधारण डाक) विदेश : वार्षिक : 80 डॉलर

भारतीय भाषा परिषद के नाम से चेक या ड्राफ्ट भेजें



एजेंसियों और सदस्यों द्वारा चेक से भुगतान Bharatiya Bhasha Parishad के नाम

या Neft द्वारा : Kotak Mahindra Bank, Branch : Loudon Street,

A/c no. 8111974982, IFSC Code KKBK0006590 पर भुगतान करें।

भुगतान के बाद एस एम एस या व्हाट्सअप कर दें 8910269814 : मीनाक्षी दत्ता

जानकारी : कार्यालय के दिन दोपहर 12 बजे से संध्या 6 बजे तक

समय पर भुगतान करने वाली एजेंसियों को ही हम भविष्य में पत्रिका भेज पाते हैं।

● प्रकाशित रचनाओं से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

● वागर्थ से संबंधित सभी विवाद कोलकाता न्यायालय के अधीन होगा।

● वेबसाइट : www.bharatiyabhashaparishad.org

वागर्थ प्रबंध प्रभार : मीनाक्षी दत्ता

वितरण तथा अन्य कार्य : बैद्यनाथ कामती, खेत्राबासी बारीक,

संतोष सिंह, प्रदीप नायक, प्रेम नायक

आप क्यू आर

कोड स्कैन

करके भी

भारतीय भाषा

परिषद के नाम

भुगतान कर

सकते हैं।

भुगतान करने

के बाद

मोबाइल नंबर

सहित संपूर्ण

विवरण भेज दें।



संपादकीय

कलाएं और बाजार का सौंदर्यशास्त्र

कलाओं का जन्म इसलिए नहीं हुआ कि हमारा संसार बड़ा सुंदर था। कलाएं इसलिए अस्तित्व में आईं कि इस संसार में केवल जीना काफी न था, जानना भी जरूरी था कि हम जीवन में कुछ भी कैसे याद रख सकते हैं, जीवन को कैसे अर्थ दे सकते हैं और संसार कैसे अधिक सुंदर हो सकता है। कलाएं स्मृति की संतान होने के साथ जीवन की सुंदरताओं की खोज हैं।

प्राचीन पौराणिक कथाओं में शिव और कृष्ण दो ऐसे देवता हैं जो प्राचीन सौंदर्यशास्त्र के कुछ अनोखे संकेत देते हैं। शिव के नटराज और कृष्ण के नटनागर या रासलीला रूप में दिख सकता है कि इस देश के लोग कलाओं के भीतर से क्या चाहते थे, क्या सोचते थे और 21वीं सदी का बाजार-सौंदर्यशास्त्र उससे कितना अलग हो चुका है। आज यह समझना जरूरी है कि बाजार का सौंदर्यशास्त्र कलाओं के साथ क्या कर रहा है। यह भी जानना चाहिए कि एक समय कला के उद्देश्य क्या रहे हैं।

भरत मुनि के नाट्यशास्त्र (200 ईसा पूर्व) में एक जगह कहा गया है कि कलाकारों को सामाजिक पाखंडों को उजागर करने के कारण वर्ण व्यवस्था से बाहर निकाल दिया गया। शिव कुछ ऐसी ही स्थितियों के बीच 5वीं सदी में नर्तक रूप में लोकप्रिय होते हैं। वे कला का महिमामंडन करते हैं, उनका नटराज रूप एक हस्तक्षेप है! इसी तरह कृष्ण का नटनागर रूप सूर के काव्य और कृष्णलीला (15वीं सदी) में उभर कर आया।

सौंदर्य घटित कैसे होता है

शिव के नटराज और कृष्ण के नटनागर-सह-रासलीला रूप को जरा आसपास रखकर देखें। दोनों प्राचीन धर्मशास्त्र से बाहर हैं और अपनी-अपनी कला से जीवन की रोचक व्याख्या देते हैं। नटराज रूप में शिव के चेहरे पर गहन शांति का भाव है तो कृष्ण के समस्त व्यवहार में खिलंदड़ापन है।